201 P
757
M
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1280/1017

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 757

No. 25-

* वन्दे मातरम् *

सत्याग्रह संग्राम का बिगुल

पण्डित जवाहरलाल जी नैहरू

प्रथम बार १०००

मूल्य)॥

RECEIVED.
DEPARTMENT

संग्रहकर्त्ता व प्रकाशक—

रघुबरदयाल विद्यार्थी कांग्रेस कमेटी

फीरोजाबाद आगरा।

891.431
V667Sa

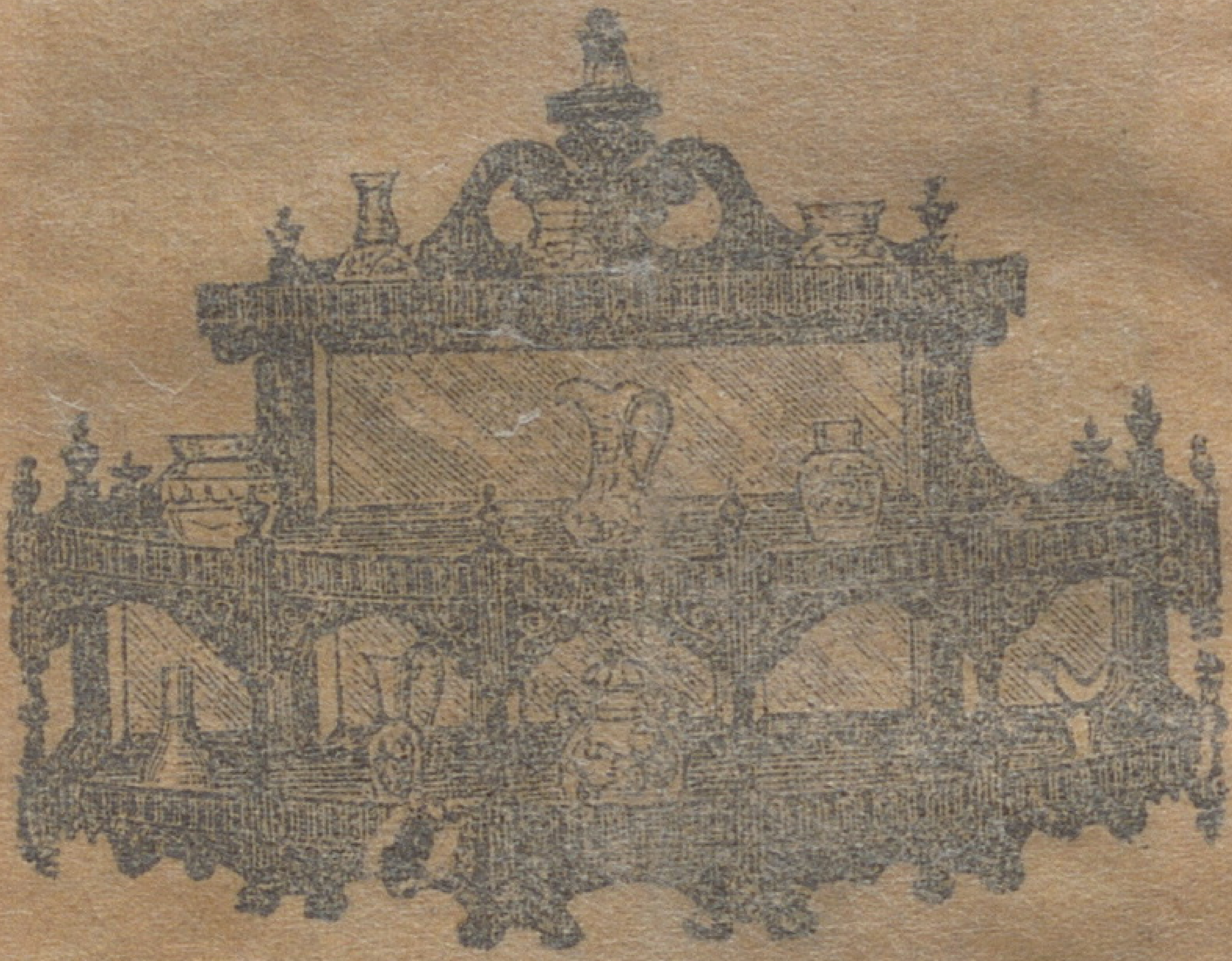

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 757
Date 20.12.71
GOVT. OF INDIA

मुद्रक—

सरदारसिंह वर्मा

आदर्श प्रेस, आगरा।

प्रार्थना

अब तो दया करो भगवान !

दया करो तुमने उन पर है जो थे पाप निधान।
कब की दी अर्जी भारत ने देते क्यों नहिं ध्यान ॥
देख रहे हो स्वयं प्रभो तुम उसका पतन महान।
जिनको दिया मान भारत ने वे करते अपमान ॥
पड़ा गुलामी में रोता है खोकर निज अभिमान।
अन्न वस्त्र दे पाला जिनको और सिखाया ज्ञान ॥
वे कहलाते दानी—ज्ञानी दिखलाते हैं शान ॥
बहुत हुआ अब सहा न जाता आय कंठ में प्रान।
'मीर' विनय सुन दे दो प्रभुवर ! आजादी का दान ॥

राष्ट्रीय झण्डा नं० २

मोहन विश्व विजय कर तारा।
झण्डा जीवन-राष्ट्र हमारा ॥

तीन रंग की छटा नियारी—ऐक्य गोट की प्रेम किनारी।
दीन देश की प्रथा सुधारी—शक्ति धर्म संजीवन डारी ॥

जय जय स्वतंत्र साम्य सुख प्यारा।
झण्डा, जीवन राष्ट्र हमारा ॥

दुःख विमोचन इसका प्रण है—स्वराज्य लेना इसका धन है।
इस पर दानव विफल दमन है—सत्यकर्म है यही अमन है॥

असहयोग सिद्धान्त हमारा।
झण्डा, जीवन राष्ट्र हमारा॥

राजद्रोह का इसे न डर है—सच्चा सेवक यही अमर है।
शत्रु अमोघ दासता का है! पुण्य पुरातन इसका घर है॥

स्वार्थ—त्याग—आदर्श हमारा।
झण्डा जीवन राष्ट्र हमारा॥

गजल नं० ३

भूल कर युद्ध मोर्तिंग मंजूर वन्देमातरम्।
हर जगह पर धूम है भरपूर वन्देमातरम्॥
आर्श शेता फर्श तक दरदर दरोदीवार पर।
हो रही है हिंद में मशहूर वन्देमातरम्॥
जान तक इसके लिए कुर्बान अपनो कर चुके।
कर नहीं सकते जुबाँ से दूर वन्देमातरम॥
हथकड़ी बेड़ी गले में तौक भी पहिने अगर।
दार पर तैयार मंसूर वन्देमातरम्॥
सरसे पावों तक वही खुशबू बसंती रंग की।
हो रही सरसार बन काफूर वन्देमातम्॥

कृष्ण मन्दिर की बहार नं० ४

जेल मत समझो बिरादर जेलखाने के लिए।
कृष्ण मन्दिर है वहाँ परसाद पाने के लिये॥
दो समय परसाद वहां मिलता बराबर नियम से।
एक चमचा दाल रोटी पांच खाने के लिए॥
हापड़ के पापड़ से भी बढ़कर रोटियां हैं ज्वार की।
दाल क्या है जीरा जल कब्जी मिटाने के लिये॥
वहाँ कोई बेकार भी बैठ सकता है नहीं।
चक्र भी है कृष्ण का चक्की चलाने के लिए॥
शर्म है गर चोरी जारी करके जावें जेल में।
देश हित तैयार हैं गर्दन कटाने के लिए॥

गजल नं. ५

क्या हुआ गर मर गये अपने वतन के वास्ते।
बुलबुलें कुर्बान होती हैं चमन के वास्ते॥
तरस आता है तुम्हारे हाल पर अय हिन्दियो।
गैर के मुहताज हो अपने कफ़न के वास्ते॥
देखते हैं आज कितने शाद हैं आजाद हैं।
क्या तुम्हीं पैदा हुए रंजो मिहन के वास्ते॥
हिन्दुओं को चाहिये डर जांय न मैदान में।
आजाद हों या मर मिटें अपने वतन के वास्ते॥

विजयी गीत नं. ६

चला दो देश में चर्खा विजय होगी विजय होगी।
कते अब सूत घर-घर में विजय होगी विजय होगी॥
धनुष गाण्डीव अर्जुन का सुदर्शन चक्र चर्खा है।
चने खा कर चलावेंगे विजय होगी विजय होगी॥
मिले डार-छाल तन को भी हम वह पहिन लेवेंगे।
विदेशी की करें होली विजय होगी विजय होगी॥
बढ़ा दे मान खद्दर का। यही सन्देश गाँधी कर।
गुलामी तो न काटेंगे विजय होगी विजय होगी॥

राष्ट्रीय गीत नं० ७

नाम जिन्दों में लिखा जायँगे मर-मरते।
लाज भारत की बचा जायँगे मरते-मरते॥
रूह तन होंगे जुदा इनका। तो होना ही है।
हम तो बिछुड़ों को मिला जायँगे मरते मरते॥
खाक में जिस्म किसी और का मिला होगा।
हम तो बिछुड़ों को मिला जायेंगे मरते-मरते॥
वह कोई और हैं जो रोके रुला के मरते॥
हम तो रकीबों को रुला जायेंगे मरते मरते।

तृष्णा लब आयेंगे जिस वक्त रकीबे नादां ।
खून तक अपना पिला जायेंगे मरते मरते ।
मरने वालो जो मरो आन पर अपनी मरना ।
चन्द्र तो ये ही सिखायेंगे मरते मरते ।

ग़ज़ल नं. ८

तब्दील गवर्नमेण्ट की रफ्तार न होगी ।
गर कौम असहयोग पर तैयार न होगी ॥
बन जायँगे हर शहर में जलियानवाले बाग ।
इस मुल्क से गर दूर यह सरकार न होगी ॥
दुश्मन को असहयोग से हम ज़ेर करेंगे ।
इन हाथों में बन्दूक व तलवार न होगी ॥
वह कौन वसीरे वतन होगा नहीं जिस पै ।
हँस हँस के फिदा जेल की दीवार न होगी ॥
जब तलक इस खून से सींचेंगे नहीं हम ।
खेती वतन की दोस्तों गुलज़ार न होगी ॥
हम ऐसी सल्तनत को मिटायेंगे मुज़तरिब ।
गम में हमारे जो कभी गमख्वार न होगी ॥

अब तो ठाना है यही नं. ९

देश पर बलिदान होना अब तो ठाना है यही ।
जान जाये तो न रोना अब तो ठाना है यही ॥

तोप अरु बन्दूक या तलवार का कुछ डर नहीं।
खोल सीना गोली खाना अब तो ठाना है यही॥
बोटी-बोटी चाहे काटो तो भी कुछ पर्वाह नहीं।
कौम पर कुर्बान होना अब तो ठाना है यही॥
हथकड़ी या बेड़िआँ या तौक भी पहने अगर।
पर कदम पीछे न धरना अब तो ठाना है यही॥
जेल में जायें अगर तो कृष्ण मन्दिर जान कर।
बन तिलक तप वहाँ पै करना अबतो ठाना है यही॥
यज्ञ भूमि बन गया है सारा भारत वर्ष देश।
यज्ञ समिधा स्वयं बनना अब तो ठाना है यही॥
यज्ञ करने यज्ञ में जो असुर दल आते रहे।
यज्ञ आजादी का करना अब तो ठाना है यही॥

स्वराज्य की चाह नं. १०

हमें है क्यों स्वराज्य की चाह ?
हम बाईस करोड़ के लगभग बसते यहाँ किसान।
दाना पास न बचता इतना भरने अधिक लगान॥
महात्मा गांधी ठीक गवाह।
इसी से है स्वराज्य की चाह॥
कई महीने मजदूरी से ऋण से रह अधपेट।
समय काटते ज्यों त्यों होते जाते मटिया मेट॥

किन्तु किस को इसकी पर्वाह।
इसी से है स्वराज्य की चाह ॥
फटी पुरानी वही गुदड़िया मौसम हो बरसात।
या गरमी या भद्दर जाड़े पाले की हो रात ॥
सिसकते रोते भरते आह।
इसी से है स्वराज्य की चाह ॥
कितना ही हो अन्न देश में पर हमसे क्या काम।
भूखों मरते तन पर केवल हड्डी सूखा चाम।
कहां तक होते जाँय तबाह।
इसी से है स्वराज्य की चाह ॥

स्वराज्य की आवश्यकता नं. ११

जब तक मिलता नहीं स्वराज्य बिगड़ता भारत नहीं संभलता।
कई एक ऐसे हैं आज।
जिनसे है हो रहा अकाज ॥
उनमें रौलट एक्ट भी आज-बहुत बुरे ढँग से है खलता ॥
देते हिंसक पशु हैं क्लेश।
उनके लिये खुला है देश ॥
कितने वंश हुए निश्शेष-सूना भवन न दीपक जलता।
डाकू दल बढ़ता दिन-दिन।
डाका फिर डाले गिन-गिन ॥
रहती लूट मार-हर दिन-जो तक लेता लेकर चलता ॥

इतनी कृपा करे सरकार।
हमको भी दे दे हथियार ॥
मरते लुटते खाते मार-छूंछे हाथों क्या बस चलता ॥

स्वराज्य क्यों चाहिये नं. १२

यों दीन देश होकर जो मर मिटा न होता।
'पावे स्वराज्य भारत' हमने कहा न होता ॥
व्यापार और धंधे रहते लगान घटता।
धन धान्य-पूर्ण भारत तो क्यों हुआ न होता ॥
हाँ सोल्ट एक्ट तोड़ो कहते कभी नहीं हम।
तो चार आने मन अब फिर क्यों बिका न होता ॥
व्यापार नीति होती जो हाथ में हमारे।
जापान आदि ने तो यों घर भरा न होता ॥
इतना अधिक हमें जो देना न टैक्स पड़ता ;
भर पेट अन्न हमको फिर क्यों मिला न होता ॥

आल्हा छन्द नं. १३

बिदा करो मां जाते हैं हम विजय ध्वजा फहराने आज।
देश स्वतंत्र बनाने जाते हम निज शीश चढ़ाने आज ॥
वीर प्रसू तू रोती क्यों है तेग अहिंसा मेरे हाथ।
मलिन वेष यह आंसू कैसे क्यों कंपित होता है गात ॥

तेरे चरणों की रज लेकर जाते हैं करने रण रंग।
फिर भय किसका है ये जननी निश दिन हमारे संग॥
अहिंसात्मक सत्याग्रह की बाजेगी रण-भेरी आज।
तब रिपु दल सब यही कहेगा तुम लो देश आपना आज॥
उन्नत सिर नत हो जावेंगे टूट पड़ेंगे नभ के तार।
विश्व देखता रह जावेगा जब सत्याग्रह की होगी मार॥
विजय देवि आकर धोयेंगीं तब चरणों को सज नव साज।
पुलकित होकर हम गावेंगे भारत भूमि हमारी आज॥
चलो-चलो सब भारत वीरो संकट टारन माँ के आज।
बहुत दुःख माता ने पाये अबतो इसकी राखो लाज॥
गैर मुल्क के लखें तमाशा धन्य-धन्य भारत संतान।
फिर से गुरू करो भारत को तबही होय आपका मान॥

"विशारद"

सैनिक गान नं. १४

अब तो रण छेड़ दिया है जाग उठा है देश।
अंग जगा है बंग जगा है पंच नदों का देश॥
गुज्जर नागा मद्र जगा है जगा युक्त प्रदेश।
उत्कल जागा सिंध जगा है जागा मध्य प्रदेश॥
नमक बनाओ नियम मिटाओ सुनाओ यह संदेश।
बहुत सहा है अब न सहेंगे पराधीनता क्लेश॥

मर मिटने को उतर पड़ो अब धर वीरों का वेष।
स्वतंत्रता की ध्वजा उड़ाओ कर जीवन निःशेष॥

जो कुछ होवे हो जाने दो उर न धरो दुख लेश।
दिखा दो यह निर्वीर नहीं है वीर वरों का देश॥

नौजवानो नं. १५

नौजवानो हो खड़े अब काम करने के लिए।
आ गया लाहौर से पैगाम लड़ने के लिए॥

देश के मैदान में कर्मण्यता दिखलाय दो।
तुम नहीं पैदा हुए खटिया पर मरने के लिये॥

कौन सा दिन आपका आयेगा वीरो जोश का।
हर घड़ी तैयार है दुश्मन अकड़ने के लिए॥

जालिमों के जुल्म अब तक झेलते ही तुम रहे।
आप अब तैयार हो रिपु को जकड़ने के लिए॥

आसतीनें मारवन जो अपने पहलू रहे।
अब हमारे लग गये बाजू कतरने के लिए॥

है विनय यह आप से असहयोग मंत्र सम्हाल लो।
खौफ़ से जिसके लगे अगियार डरने के लिए॥

रसिया नं. १६

सब मिल चलो वीरगण आज देश आज़ाद बनाना है।
शहर ग्राम में आज नमक कानून मिटाना है॥
स्वतंत्रता की बलिवेदी पर शीश चढ़ाना है।
निर्भय होकर आज शत्रु के सम्मुख जाना है॥
हाथ तिरंगा झण्डा ले सबको समझाना है।
अन्यायी के शासन में सब लुटा खजाना है॥
मगरूरों से कहो कि अब नहिं चले बहाना है।
करो खतम अब न्याय का नाटक देश विराना है॥
निज सम्राट जवाहर राजा सबने माना है।
इसीलिए सब देश मांहि झण्डा फहराना है॥
क्यों जेलों से डरें हमें फाँसी पर जाना है।
ब्रिटिश राज्य के आगे अब नहिं शीश झुकाना॥
गये जवाहर जेल यही सबको बतलाना है।
जाकर जेल हमें भी अब निज शीश चढ़ाना है॥

रसिया न. १७

बहनो क्यों बैठी आलस में अब तो चर्खा लेउ सम्हार।
हाथ कते के थान बुना लो अब तो तुम दो चार॥

बस्त्र विदेशी मतना पहनो अग्नी बीच पजार।
है बेशर्म विलायती साड़ी दो झटके से फाड़॥
फिर क्यों भारत के खो जावेंगे ये सत्तर हजार।
देश सेवक की अर्ज मान लो मती हिलाओ भार॥
चर्खा कातो पहनो गाढ़ा होगा देश सुधार।
गोरों के दिल पर भारत का दो सिक्का बैठार॥

वन्देमातरम् न. १८

छीन सकती है नहीं सरकार वन्देमातरम्।
हम गरीबों के गले का हार वन्देमातरम्॥
जेल में चक्की घसीटें भूख से हों मर रहे।
उस समय भी कह रहे बेज़ार वन्देमातरम्॥
सर चढ़ों के तर में चक्कर उस समय आता जरूर।
कान में पहुँची जहां झनकार वन्देमातरम्॥
चारपाई पर पड़ा हो कह रहा जल्लाद से।
भोंक दे सीने में वह तलवार वन्देमातरम्॥
डाक्टरों ने नब्ज देखी सिर हिला कर कह दिया।
हो गया उसको तो है आज़ार वन्देमातरम्॥
ज़ालिमों का जुल्म भी काफ़ूर से उड़ जायगा।
फैसला होगा सरे दरबार वन्देमातरम्॥

नम्बर १६

वीर बन करके झंडा उठा लो, लाज भारत की मिल कर बचा लो ।
जेल जाने से हम न डरेंगे, अपने हक के लिए हम मरेंगे ॥
प्राण अपने विछावर करेंगे, अपना वार तुम हम पर आजमालो ।
हम अहिंसा व्रत धारण करेंगे, क्रोध को अपने दिल से हरेंगे ॥
शान्ति से प्रचार हम करेंगे, चाहे जितना हमें तुम सता लो ।
भारत माता के प्यारे दुलारो, वस्त्र तन से विदेशी उतारो ॥
बिगड़ी हालत तुम अपनी सुधारो, तुम जरा सोचो ए देश वालो ।
रोज पकड़े वह नेता हमारे, चाहे जितने करें जुल्म भारी ॥
फिर भी बनते हैं हाकिम हमारे, अपने जुल्मों का कर खातमा लो ।
चन्द्र अब तो गुलामी को छोड़ो, जेल जाने से तुम मुँह न मोड़ो ॥
देश आजाद तुम करके छोड़ो, अब आजाद हो हिन्द वालो ।

मिलने का पता—

रघुवरदयाल विद्यार्थी

कांग्रेस कमेटी, फीरोजाबाद (आगरा)